प्रथम विश्व युद्ध

प्रथम विश्व युद्ध, जिसे महान युद्ध के रूप में भी जाना जाता है, 28 जुलाई 1914 से 11 नवंबर 1918 तक चला। प्रथम विश्व युद्ध मित्र देशों और केंद्रीय शक्तियों के बीच लड़ा गया था।

मित्र देशों के मुख्य सदस्य फ्रांस, रूस और ब्रिटेन थे। संयुक्त राज्य अमेरिका ने भी 1917 के बाद मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ाई लड़ी।
केंद्रीय शक्तियों के मुख्य सदस्य जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, ओटोमन साम्राज्य और बुल्गारिया थे।

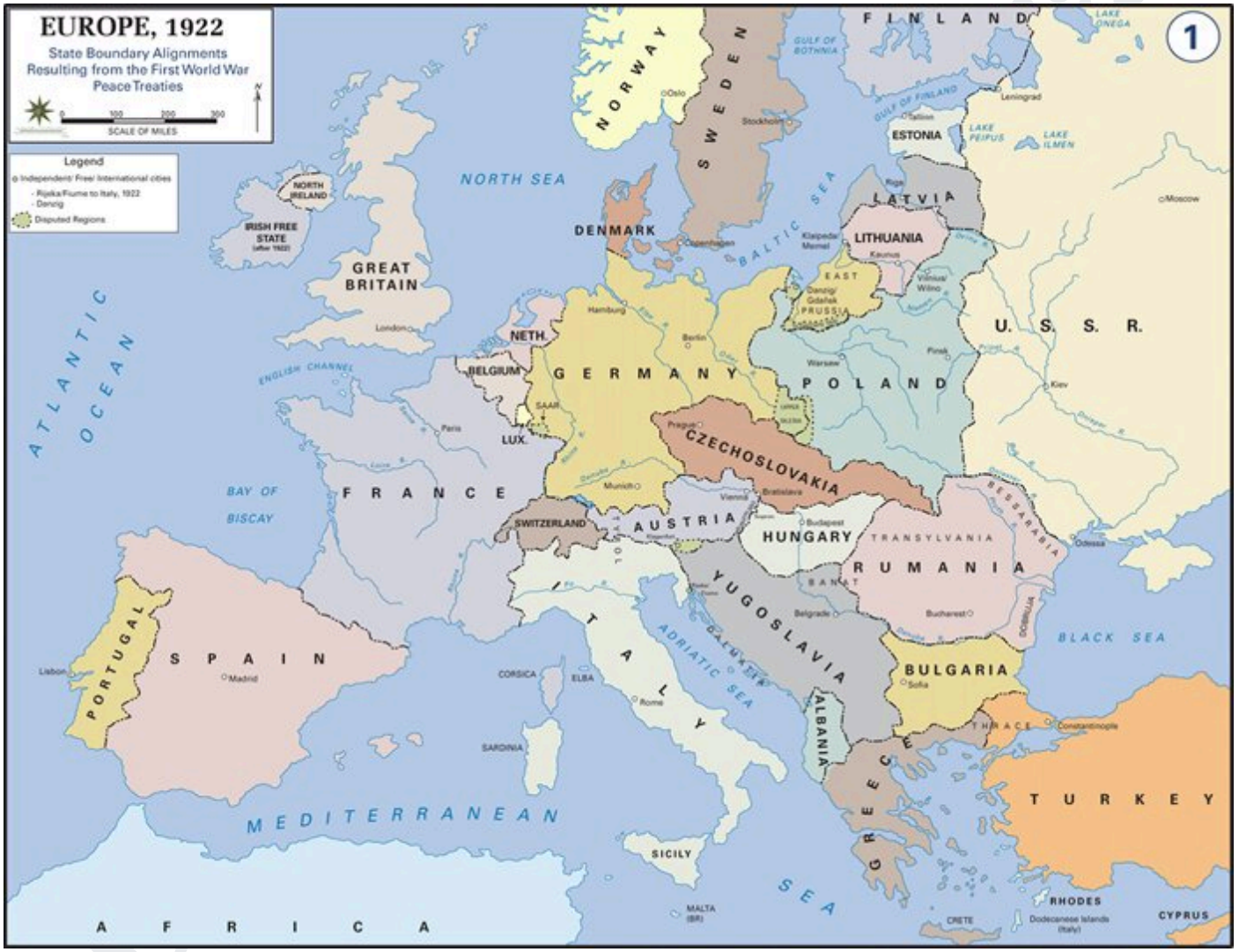

युद्ध के कारण

प्रथम विश्व युद्ध का कोई एक कारण नहीं था। यह युद्ध कई अलग-अलग घटनाओं के कारण हुआ जो 1914 तक के वर्षों में हुईं।

जर्मनी की नई अंतर्राष्ट्रीय विस्तारवादी नीति: 1890 में जर्मनी के नए सम्राट विल्हेम द्वितीय ने एक अंतर्राष्ट्रीय नीति शुरू की जिसका उद्देश्य अपने देश को एक विश्व शक्ति बनाना था। जर्मनी को अन्य शक्तियों द्वारा एक खतरे के रूप में देखा गया और इसने अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को अस्थिर कर दिया।

आपसी रक्षा गठबंधन: पूरे यूरोप के देशों ने आपसी रक्षा समझौते किए। इन संधियों का मतलब था कि अगर किसी एक देश पर हमला होता है, तो संबद्ध देश उसकी रक्षा करने के लिए बाध्य थे।

त्रिपक्षीय गठबंधन-1882 जिसने जर्मनी को ऑस्ट्रिया-हंगरी और इटली से जोड़ा।

साम्राज्यवाद: प्रथम विश्व युद्ध से पहले, अफ्रीका और एशिया के कुछ हिस्से यूरोपीय देशों के बीच उनके कच्चे माल के कारण विवाद के केंद्र थे। बढ़ते प्रतिस्पर्धा और बड़े साम्राज्यों की इच्छा ने उस टकराव को बढ़ाया जिसने दुनिया को प्रथम विश्व युद्ध में धकेलने में मदद की।

सैन्यवाद: जैसे ही दुनिया 20वीं सदी में प्रवेश कर रही थी, हथियारों की होड़ शुरू हो गई थी। 1914 तक, जर्मनी में सैन्य निर्माण में सबसे अधिक वृद्धि हुई थी। इस अवधि में ग्रेट ब्रिटेन और जर्मनी दोनों ने अपनी नौसेनाओं में काफी वृद्धि की। सैन्यवाद में इस वृद्धि ने शामिल देशों को युद्ध में धकेलने में मदद की।

राष्ट्रवाद: युद्ध की उत्पत्ति का अधिकांश भाग बोस्निया और हर्ज़ेगोविना में स्लाव लोगों की ऑस्ट्रिया-हंगरी का हिस्सा न रहकर सर्बिया का हिस्सा बनने की इच्छा पर आधारित था। इस तरह, राष्ट्रवाद ने युद्ध को जन्म दिया।

आर्कड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड की हत्या: जून 1914 में, ऑस्ट्रिया-हंगरी के सिंहासन के उत्तराधिकारी आर्कड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड को बोस्निया के साराजेवो के दौरे के दौरान गोली मार दी गई थी। उन्हें एक सर्बियाई व्यक्ति ने मार डाला था, जिसने सोचा था कि ऑस्ट्रिया के बजाय सर्बिया को बोस्निया पर नियंत्रण रखना चाहिए। अपने नेता की हत्या के कारण, ऑस्ट्रिया-हंगरी ने सर्बिया पर युद्ध की घोषणा कर दी। इसके परिणामस्वरूप:

- ➔ रूस शामिल हो गया क्योंकि उसका सर्बिया के साथ गठबंधन था।
- ➔ जर्मनी ने तब रूस पर युद्ध की घोषणा कर दी क्योंकि जर्मनी का ऑस्ट्रिया-हंगरी के साथ गठबंधन था।
- ➔ ब्रिटेन ने जर्मनी पर युद्ध की घोषणा कर दी क्योंकि उसने तटस्थ बेल्जियम पर आक्रमण किया था - ब्रिटेन के बेल्जियम और फ्रांस दोनों की रक्षा करने के समझौते थे।
- ➔ युद्ध के दौरान कुछ प्रमुख लड़ाइयों में मार्ने की पहली लड़ाई, सोम्मे की लड़ाई, टैनबर्ग की लड़ाई, गैलीपोली की लड़ाई और वर्डुन की लड़ाई शामिल थीं।

युद्ध के चरण

- यह संघर्ष यूरोप, अफ्रीका और एशिया के कई मोर्चों पर विकसित हुआ। दो मुख्य परिदृश्य पश्चिमी मोर्चा था, जहाँ जर्मनों का सामना ब्रिटेन, फ्रांस और 1917 के बाद अमेरिकियों से हुआ। दूसरा मोर्चा पूर्वी मोर्चा था जिसमें रूसियों ने जर्मनों और ऑस्ट्रिया-हंगरी के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
- 1914 में जर्मन सेना के संक्षिप्त आगे बढ़ने के बाद, पश्चिमी मोर्चा स्थिर हो गया और एक लंबी और क्रूर खाई युद्ध शुरू हो गया: यह एक "क्षय का युद्ध" था (पश्चिमी मोर्चा अचल रहा)। इस बीच पूर्वी मोर्चे पर जर्मन आगे बढ़े लेकिन निर्णायक रूप से नहीं।
- 1917 में, दो घटनाओं ने युद्ध का रुख बदल दिया: संयुक्त राज्य अमेरिका मित्र राष्ट्रों में शामिल हो गया और रूस ने, रूसी क्रांति के बाद, संघर्ष छोड़ दिया और एक अलग शांति संधि पर हस्ताक्षर किए।
- अंततः 1918 के वसंत में जर्मन आक्रमण के बाद, मित्र देशों के जवाबी हमले ने जर्मन सेना को निर्णायक पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। जर्मनी के सहयोगियों की हार और जर्मनी में क्रांति जिसने विल्हेम द्वितीय

DR. Yogesh Moral

(जर्मन सम्राट) को सिंहासन से हटा दिया, के कारण 11 नवंबर 1918 को युद्धविराम पर हस्ताक्षर किए गए। महान युद्ध समाप्त हो गया।

<u>युद्ध के परिणाम</u>

आर्थिक परिणाम: प्रथम विश्व युद्ध में भाग लेने वाले देशों को बहुत अधिक धन खर्च करना पड़ा। जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन ने अपनी अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पादित धन का लगभग 60% खर्च कर दिया। देशों को कर बढ़ाना पड़ा और अपने नागरिकों से पैसे उधार लेने पड़े। उन्होंने हथियार और युद्ध के लिए आवश्यक अन्य चीजें खरीदने के लिए पैसे भी छापे। इससे युद्ध के बाद मुद्रास्फीति हुई।

राजनीतिक परिणाम: प्रथम विश्व युद्ध ने चार राजशाहियों का अंत कर दिया: रूस के ज़ार निकोलस द्वितीय, जर्मनी के कैसर विल्हेम, ऑस्ट्रिया के सम्राट चार्ल्स और ओटोमन साम्राज्य के सुल्तान को पद छोड़ना पड़ा।

- पुराने साम्राज्यों से नए देश बनाए गए। ऑस्ट्रिया-हंगरी को कई स्वतंत्र राज्यों में विभाजित कर दिया गया।
- रूस और जर्मनी ने पोलैंड को भूमि दी। मध्य पूर्व के देशों को ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के नियंत्रण में रखा गया था।
- ओटोमन साम्राज्य का जो कुछ भी बचा था वह तुर्की बन गया।

सामाजिक परिणाम: विश्व युद्ध ने समाज को पूरी तरह से बदल दिया। जन्म दर में गिरावट आई क्योंकि लाखों युवा पुरुष मारे गए (अस्सी लाख की मृत्यु हुई, लाखों घायल, अपंग, विधवाएँ और अनाथ हुए)। नागरिकों ने अपनी जमीन खो दी और दूसरे देशों में भाग गए।

- **महिलाओं की भूमिका भी बदल गई।** उन्होंने कारखानों और कार्यालयों में पुरुषों की जगह लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। युद्ध समाप्त होने के बाद कई देशों ने महिलाओं को वोट देने के अधिकार सहित अधिक अधिकार दिए।
- **उच्च वर्गों ने समाज में अपनी अग्रणी भूमिका खो दी**। युवा मध्यम और निम्न वर्ग के पुरुषों और महिलाओं ने युद्ध के बाद अपने देश के निर्माण में अपनी बात रखने की मांग की।

<u>वर्साय की संधि</u>: 28 जून, 1919 को वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर के साथ प्रथम विश्व युद्ध आधिकारिक तौर पर समाप्त हो गया। वर्साय की संधि दुनिया को एक और युद्ध में जाने से रोकने का एक प्रयास था। यह कई अध्यायों में व्यवस्थित है, जिनमें से प्रत्येक में अलग-अलग खंड हैं।

- **क्षेत्रीय खंड:** फ्रांस ने अलसैस और लोरेन को वापस पा लिया यूपेन और मालमेडी बेल्जियम के हाथों में चले गए पूर्वी क्षेत्रों पर पोलैंड ने कब्जा कर लिया, जिसके कारण पूर्वी प्रशिया क्षेत्रीय रूप से अलग हो गया। डैनज़िग और मेमेल, पूर्व बाल्टिक जर्मन शहरों को स्वतंत्र शहर घोषित किया गया डेनमार्क ने उत्तरी श्लेस्विग-होलस्टीन पर कब्जा कर लिया जर्मनी ने अपनी सभी उपनिवेशों को खो दिया और विजेताओं ने उन पर कब्जा कर लिया
- **सैन्य खंड:** जर्मन नौसेना की भारी सीमा। सेना में भारी कमी (केवल 100,000 सैनिक, टैंक, विमान और भारी तोपखाने रखने पर प्रतिबंध)। राइनलैंड क्षेत्र का विसैन्यीकरण।

P.R. Yogesh Moral

- **युद्ध क्षतिपूर्ति:** संधि ने जर्मनी और उसके सहयोगियों को मित्र राष्ट्रों द्वारा झेले गए सभी 'नुकसान और क्षति' के लिए जिम्मेदार ठहराया और परिणामस्वरूप उन्हें विजेताओं को युद्ध क्षतिपूर्ति का भुगतान करने के लिए मजबूर किया गया।

अन्य संधियाँ -

न्यूली की संधि, बुल्गारिया के साथ हस्ताक्षरित

- छोटे बाल्कन देश को रोमानिया, ग्रीस और एक नए देश: यूगोस्लाविया के लाभ के लिए कई क्षेत्रीय नुकसान हुए।

सेव्रेस की संधि (1920) तुर्की के साथ हस्ताक्षरित

- सेव्रेस की संधि बेहद कठोर थी और इसके कारण कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की का राष्ट्रीय विद्रोह हुआ। इसके कारण ग्रीस के खिलाफ युद्ध भी हुआ, जिसने अनातोलिया के बड़े क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया था।

हालाँकि, युद्ध ने अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक और वैचारिक परिवर्तन भी लाए

- अमेरिका, जिसने युद्ध जीता था लेकिन अपने क्षेत्र पर संघर्ष का अनुभव नहीं किया था, एक प्रथम विश्व शक्ति बन गया।
- पुरुषों के बड़े पैमाने पर लामबंदी के कारण महिलाओं को कार्यबल में शामिल किया गया, जो महिलाओं के अधिकारों के लिए एक बड़ा कदम था।
- सोवियत क्रांति (रूसी क्रांति) की विजय और युद्ध के बाद के सामाजिक संकट ने कई देशों के श्रमिकों को विरोध करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे एक पूर्व-क्रांतिकारी माहौल बन गया।
- युद्ध के दौरान अनुभव किए गए चरम राष्ट्रवाद, कम्युनिस्ट क्रांति के डर के साथ मिलकर, कुछ देशों की मध्यम वर्ग की आबादी को चरम दक्षिणपंथी की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इसने फासीवादी आंदोलनों के लिए एक उपजाऊ जमीन तैयार की।
- राष्ट्र संघ का निर्माण: राष्ट्र संघ प्रथम विश्व युद्ध के बाद विकसित एक अंतरराष्ट्रीय राजनयिक समूह था, जिसका उद्देश्य देशों के बीच विवादों को खुले युद्ध में बदलने से पहले हल करना था। संयुक्त राष्ट्र के अग्रदूत, लीग ने कुछ जीत हासिल कीं, लेकिन सफलता का एक मिश्रित रिकॉर्ड रहा।

<u>भारत और प्रथम विश्व युद्ध</u>

- एक पूर्व ब्रिटिश उपनिवेश होने के नाते, भारत ने जर्मनी और उसके सहयोगियों पर ब्रिटेन और उसके सहयोगियों की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, एक ऐसी भूमिका जिसे अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है।
- एक ब्रिटिश उपनिवेश होने के नाते, भारतीय सेना ने प्रथम विश्व युद्ध में यूरोप, भूमध्यसागरीय और मध्य पूर्व के युद्ध संघर्षों में बड़ी संख्या में सैनिक भेजे।
- भारतीय सेना ने पूर्वी अफ्रीका में जर्मन साम्राज्य और पश्चिमी मोर्चे पर भी लड़ाई लड़ी।
- उन्होंने फ्रांस और बेल्जियम, मेसोपोटामिया, मिस्र, गैलीपोली, फिलिस्तीन और सिनाई जैसे विविध स्थानों पर सेवा की।
- प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों की सेवा करने वाले 70 हजार से अधिक भारतीय सैनिकों ने अपनी जान गंवाई। भारतीय सेना के कमांडर-इन-चीफ सर क्लाउड ऑचिनलेक ने एक बार कहा था: "अगर उनके पास भारतीय सेना नहीं होती तो ब्रिटेन युद्धों से नहीं गुजर पाता।"
- भारत द्वारा ब्रिटेन को 100 मिलियन ब्रिटिश पाउंड तक की राशि युद्ध के वित्तपोषण के लिए दी गई थी, जिसके बदले में डोमिनियन स्टेटस और स्वशासन की उम्मीद थी।

Dr. Yogesh Moral

- अंग्रेजों ने भारत से पुरुषों और धन के साथ-साथ भोजन, नकदी और गोला-बारूद की बड़ी आपूर्ति एकत्र की, जिसे ब्रिटिश कराधान नीतियों द्वारा एकत्र किया गया था। बदले में, अंग्रेजों ने युद्ध की समाप्ति पर भारत को स्वशासन प्रदान करने का वादा किया था, जिसे अंततः पूरा नहीं किया गया।
- हालाँकि, "युद्ध को समाप्त करने वाला युद्ध" विपरीत साबित हुआ। वर्साय की संधि के माध्यम से जर्मनी की आर्थिक बर्बादी और राजनीतिक अपमान सुनिश्चित करके, युद्ध के बाद के समझौते ने द्वितीय विश्व युद्ध के लिए उपजाऊ जमीन प्रदान की।

DR. Yogesh Moral